Roll No. ..... Total Pages: 04

4173

M. A. (Previous) EXAMINATION, 2018

संस्कृत साहित्य

तृतीय प्रश्न पत्र

काव्य नाटक एवं साहित्य शास्त्र

Time: Three Hours

Maximum Marks: 100

PART – A (खण्ड – अ) *[Marks: 20]*

Answer all questions (50 words each).

All questions carry equal marks.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART – B (खण्ड – ब) *[Marks: 50]*

Answer five questions (250 words each).

Selecting one from each unit. All questions carry equal marks.

*प्रत्येक इकाई से **एक–एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल पाँच प्रश्न कीजिए।*

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART – C (खण्ड – स) *[Marks: 30]*

Answer any two questions (300 words each).

All questions carry equal marks.

*कोई **दो प्रश्न** कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।*

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड– अ

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिये। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

इकाई – I

(1) यक्ष के अनुसार कैलाश पर्वत तक मेघ के सह यात्री कौन होंगे?

(2) कोमल अन्तरात्मा वाला प्रत्येक व्यक्ति कैसा होता है?

इकाई – II

(3) चाणक्य चन्द्रगुप्त का मन्त्री किसे बनाना चाहता था?

(4) अमात्य राक्षस ने चन्द्रगुप्त को मारने के लिये किसे विशेष रूप से तैयार किया था और चाणक्य ने उसी से किस को मरवा दिया?

इकाई – III

(5) वाक्य की परिभाषा लिखिये।

(6) व्यञ्जना शब्दशक्ति के दो मुख्य भेदों के नाम लिखिये।

इकाई – IV

(7) ध्वन्यालोक के रचयिता कौन हैं?

(8) 'काव्यस्यात्मा स एवार्थः तथाचादिकवेः पुरा' यहाँ किस प्राचीन कवि का सन्दर्भ दिया गया है?

इकाई – V

(9) नाट्यशास्त्र प्रथम अध्याय की पहली कारिका में भरत मुनि ने किन्हें प्रणाम किया है?

(10) प्रेक्षागृहों में मध्यम प्रेक्षागृह को सर्वोत्तम क्यों कहा गया है?

खण्ड– ब

इकाई – I

प्र.2 व्याख्या कीजिये –

सन्तप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद प्रियायाः,
सन्देशं में हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य।
गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां,
बाह्योद्यानस्थितहरषिरश्चन्द्रिकाधौतहर्म्या।।

अथवा

श्यामास्वङ्गं चकितहरिणीप्रेक्षणे दृष्टिपातं

वक्त्रच्छायां शशिनि शिखिनां वर्हभारेषु केशान्।

उत्पश्यामि प्रतनुषु नदीवीचिषु भ्रूविलासान्

हन्तैकस्मिन् क्वचिदपि न ते चण्डि सादृश्यमस्ति।।

इकाई – II

प्र.3 सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिये –

अप्रज्ञानेन च कातरेण च गुणः स्याद्भक्तियुक्तेन कः,

प्रज्ञाविक्रमशालिनोऽपि हि भवेत्किं भक्तिहीनात्फलम्

प्रज्ञाविक्रमभक्तयः समुदिता येषां गुणा भूतये,

ते भृत्या नृपतेः कलत्रमितरे संपत्सु चापत्सु च।।

अथवा

अत्युच्छिते मन्त्रिणि पार्थिवे च

विष्टभ्य पादावुप तिष्ठते श्रीः।

सा स्त्रीस्वभावादसहा भरस्य

तयोर्द्वयोरेकतरं जहाति।।

इकाई – III

प्र.4 सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिये –

चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।

काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते।।

अथवा

मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययान्योऽर्थः प्रतीयते।

रूढेः प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता।।

इकाई – IV

प्र.5 सप्रसङ्ग संस्कृत व्याख्या कीजिये –

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।
यत्तत् प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु।।

अथवा

आलोकार्थी यथा दीपशिखायां यत्नवान् जनः।
तदुपायतया तद्वदर्थे वाच्ये तदादृतः।।

प्र.6 सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिये –

जग्राह पाठयं ऋग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि।।

अथवा

प्रेक्षागृहाणां सर्वेषां त्रिप्रकारो विधिः स्मृतः।
विकृष्टः चतुरस्त्रश्च त्र्यस्त्रश्चैव प्रयोक्तृभिः।।

खण्ड– स

इकाई – I

प्र.7 मेघदूत के अनुसार रामगिरी पर्वत से अलकापुरी तक वर्णित मेघमार्ग का विवेचन कीजिये।

इकाई – II

प्र.8 मुद्राराक्षस नाटक के आधार पर चन्द्रगुप्त का चरित्र–चित्रण कीजिये।

इकाई – III

प्र.9 साहित्यदर्पणकार के काव्य–लक्षण अथवा स्वरूप की उदाहरणपूर्वक व्याख्या कीजिये।

इकाई – IV

प्र.10 ध्वनि की स्थापना में आए ध्वनिविरोधी मतों का उल्लेख करते हुए ध्वन्यालोककार आनन्दवर्द्धनाचार्य के ध्वनिसिद्धान्त का वर्णन कीजिये।

इकाई – V

प्र.11 भरतमुनि विरचित नाट्यशास्त्र के नाट्योत्पत्ति नामक प्रथम अध्याय का सार लिखिये।